(सिंगापुरक अंगरेजीक कवयित्री ओ प्रोफेसर)
लौ सू फेंग (Lee Tzu Pheng)क
अङरेजी कविताक अनुवाद
****

लैत रहू चाहक चुस्की
स्वादि-स्वादि रसे-रसे ।
जनलक के आइ धरि जे
विदा-वेला आओत कखन ?
तखन रहत सुखक दमक
देखबा ले' समय कहाँ अपन बसे ?
तेँ, तावत् लैत रहू चाहक चुस्की
स्वादि-स्वादि रसे-रसे ।

जीवन ई क्षणभंगुर
किन्तु लगै लम्बा हे !
करबा ले' कत्ता काज बाँचल अछि ।
कते साल अनेरो मकड़जालमे जियान भेल।
शक्तिक संचय निमित्त
संघर्ष, उठा-पटक करबामे
बहि ने जाय काल सकल !
अह् ! विलम्ब किंचितो उचित न से ।
तेँ, अहाँ लैत रहू चाहक चुस्की
स्वादि-स्वादि रसे-रसे ।

हीत-मीत छथियो किछु,
चल्लो जाथि बहुतो जन ।
पौलनि जे स्नेह-सुख
आनन्दित ओ भेलाह ।
मुदा, सभ दिन सभ गोटे की
कहल जाओ, लगमे रहि सकै छथि ? पैघ हैत धिया-पुता
अँखिगर हैत, पँखिगर हैत,
उड़ि जैत ।
के कहत-- की हेतै काल्हि भ'क' ?
रहतै ने किच्छु टा अहँक बसे ।
तेँ बस, औ ! लैत रहू चाहक चुस्की
स्वादि-स्वादि रसे-रसे ।

बेसी कहू की,
मन राखू एतबे टा--
सभक सार प्रेमे टा ।
बुझियौ प्रेमक यथार्थ--
एत्तौ आ ओत्तौ
भुवनोमे, नक्षत्रक बीचोमे ।

चिन्हियनु आ मान दियनु
रक्षा-सुरक्षा जे करथि अहँक,
छथि रखैत सदरि चाँकि अहाँपर ।
आउ, मुस्कियाउ, आश्वस्तिक साँस लिय'
दुश्चिन्ताकेँ भगाउ,
होइत रहत सभ ठाम जसे-जसे ।
तेँ, लैत रहू चैनसँ चाहक चुस्की
स्वादि-स्वादि रसे-रसे ।।
***
हमर मुइला उत्तर अहाँक आँखिसँ नोर बहत,
मुदा हम तँ बुझब नहि ।
तेँ,खसा ने दिय' दू ठोप नोर एखने तइ सती!

देब अहाँ पुष्पांजलि,
मुदा हम तँ देखब नहि ।
तेँ, एखने पठा ने दिय' दू टा फूल तइ सती !

करब अहाँ हमर गुण-बखान,
मुदा हम तँ सुनब नहि ।
तेँ, क' ने दिय' एखने गुणानुवाद तइ सती !

बिसरि जैब हमर सकल गलती-अपराध अहाँ,
मुदा हम तँ जानब नहि ।
तेँ,एखने बिसरि जाउ ने से सभटा तइ सती!

खटकत अहाँकेँ हमर अभाव तहिया,
हम ने मुदा क' सकब अनुभव से ।
तेँ, एखने बिसरि क' देखाउ ने तइ सती !

हैत तखन अहाँकेँ जे संगतिमे आर समय
बितल रहैत, नीक होइत ।
तेँ, एखने किए ने बिता लै छी हमरा संग तइ सती !

जखन अहाँ सुनब हमर मृत्युक समाद
आ कि दौड़ि पड़ब हमरा ओत' श्रद्धांजलि देबा ले'
मुदा सालो बिति गेल अछि गप्प भेना परस्पर।
तेँ,एखने ल' ने लिय' खोज-खबरि तइ सती !

***
अपन निकटवर्ती समस्त समाजक एक-एक व्यक्तिक संग समय बिताबी, आ अपन परिवारक लोक-वेद, मित्रमण्डली आ सम्पर्की जनक प्रसन्नता लेल जे-जतबा क' सकै छी, करी । हुनका लोकनिकेँ अहाँ खास अन्तरंग बुझै छियनि, से हुनका अनुभव होइन, किएक तँ अकस्मात् ओ समय आबि सकै अछि आ अहाँकेँ आभासो नहि हैत, जे सदा-सदाक हेतु हुनका लोकनिकेँ अहाँसँ दूर क' देतनि ।

***

एकसरमे 'प्रलाप' टा, 'वर्तालाप' संग मिलि ।
एकसरमे 'खुशी' मुदा, 'उछाह' सभक संग मिलि ।
एकसरमे 'मुस्की' मुदा,'ठहाका' गुँजय संग मिलि।

सामाजिक सरोकारे तँ मनुक्खक आधार थिकै ।
एकर बिना जीवन ई नीरस, निस्सार थिकै ।
एकसर क्यो किछु ने छी, समाजे शृंगार थिकै ।
मिलन आ विछोह दुनू प्रकृतिक उपहार थिकै ।।

(18.10.2021)